सतगुरू सत्तनाम

(सत्त साहिब जी)

''वे हूँ परमहँस जी'' की अमृतमयी वाणी द्वारा 'भव सूं पार' होने का भेद

निराकार व साहिब जी सत्ता भेद :–

कबीर साहिब आये निजधाम सूं, सब कुछ लिये संग साथ।
''वे नाम परमहँस'' ने सब समझा, तब पायो साहिबन साथ।
निरंकार में खोया रहा, दीन दुखी संग मजेदार।
चालीस साल लगे, सतनाम जहाज आने पर।
खुलते गये परदे, जब चली सत सुरति पतवार।
सब ओर सूं वर्षा हुई, देखी निराकार की महिमां अपार।
कंई ढंगों से दर्शन दिए, मीन पपील की पाई चाल।
स्वर्ग नर्क लोकों को देखा, देखी महिमां अपरम्पार।
कुछ जग का भाया नहीं, झूठा देखा ये सब पसार।
सहस्त्रहार लोक में तब गया, जब सार सब्द था संग साथ।
निराकार सूं बंधन गया, परम पुरूष ने पकड़ा हाथ।
निराकार खुशी सूं सौंप दिया, दास को साहिबन हाथ।
किसी सूं वैर तुम मत करो, हर बात में निकले बात।
निराकार ने तन मन दिया, डाला विच माया के जाल।
हंसा रूप निजधाम तेरा, आत्म रूप किया निरंकार।
झूठा ये संसार रचा, जिस सूं होना है तुझे पार।
बिन पूर्ण सतगुरू मूल नाम, भव सूं होत ना पार ।।

—0—